JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समाज, अपराध और मीडिया : समकालीन संदर्भ में एक अध्ययन

डॉ.सियाराम मीणा
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय कोटा

सारांश

किसी भी देश की उन्नति व प्रगति में मीडिया का बहुत बड़ा योगदान होता है। यदि यह कहा जाए कि मीडिया समाज का निर्माण व पुनर्निर्माण करता है, तो यह गलत नहीं होगा। इतिहास में ऐसे अनगिनत उदाहरण भरे पड़े हैं जब मीडिया की शक्ति को पहचानते हुए लोगों ने उसका उपयोग लोक परिवर्तन के भरोसेमंद हथियार के रूप में किया है। जब भी मीडिया और समाज की बात की जाती है, तो मीडिया को समाज में जागरूकता पैदा करने वाले एक साधन के रूप में देखा जाता है। जो कि लोगों को सही व गलत करने की दिशा में एक प्रेरक का कार्य करता नजर आता है। जहां कहीं भी अन्याय, शोषण है, अत्याचार है, भ्रष्टाचार है और छलना है, उसे जनहित में उजागर करना पत्रकारिता का मर्म और धर्म है। हर ओर से निराश व्यक्ति अखबार की तरफ आता है। लेकिन मीडिया के बदलते स्वरूप में उसका दायित्व बोध, प्रतिबद्धता और संवेदनशीलता खत्म होता जा रही है। पीत पत्रकारिता, टीआरपी और पूंजी ने मीडिया को आमजन के हितों से दूर कर दिया है।

कुंजी शब्द :– मीडिया, समाज, अपराध, अन्याय, शोषण, अत्याचार, भ्रष्टाचार, मीडिया–उद्योग।

भूमिका :

आधुनिक युग में मीडिया का सामान्य अर्थ समाचार–पत्र, पत्रिकाओं, टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट आदि से लिया जाता है। किसी भी देश की उन्नति व प्रगति में मीडिया का बहुत बड़ा योगदान होता है। यदि यह कहा जाए कि मीडिया समाज का निर्माण व पुनर्निर्माण करता है, तो यह गलत नहीं होगा। इतिहास में ऐसे अनगिनत उदाहरण भरे पड़े हैं जब मीडिया की शक्ति को पहचानते हुए लोगों ने उसका उपयोग लोक परिवर्तन के भरोसेमंद हथियार के रूप में किया है। अंग्रेजों की दासता से सिसकते भारतीयों में देश– भक्ति व उत्साह भरने में मीडिया का बड़ा योगदान था। आज भी मीडिया की ताकत के सामने बड़े से बड़ा राजनेता,उद्योगपति आदि सभी सिर झुकाते हैं। मीडिया का जन–जागरण में भी बहुत योगदान है। बच्चों को पोलियो की दवा पिलाने का अभियान हो या एड्स के प्रति जागरुकता फैलाने का कार्य, मीडिया ने अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह से निभाई है।लोगों को वोट डालने के लिये प्रेरित करना,बाल मजदूरी पर रोक लगाने के लिये प्रयास करना, धूम्रपान के खतरों से अवगत कराना जैसे अनेक कार्यों में मीडिया की भूमिका सराहनीय है। मीडिया समय–समय पर नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करता रहता है। देश में भ्रष्टचारियों पर कड़ी नजर रखता है। समय–समय पर स्टिंग ऑपरेशन कर इन सफेदपोशों का काला चेहरा दुनिया के सामने लाता है। इस प्रकार मीडिया हमारे लिये एक वरदान की तरह है।

अपराध और मीडिया : समकालीन संदर्भ

मीडिया तथा संचार माध्यमों ने जहां मनुष्य को ज्ञान, सूचनाओं तथा सुविधाओं के नये–नये क्षितिज दिये है लेकिन यह भी सत्य है कि मीडिया देश और समाज के लिए फूल और कांटे के संगम की तरह सिद्ध हुआ है। मीडिया भी वरदान ही नहीं अभिशाप भी है। मीडिया या प्रेस को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। मिलती भी है। लेकिन स्वतंत्रता जब सीमा लाँघ जाए तो उच्छृंखलता बन जाती है। कुछ ऐसा ही हाल मीडिया का भी है। आज के समाज मे मीडिया पैसा कमाने के लालच में समाज को गुमराह कर रहा है। आज हमारे समाचार पत्र अपराध की खबरों से भरे रहते हैं। जबकि सकारात्मक समाचारों को स्थान ही नहीं मिलता । यदि मिलता भी है तो बीच के पन्नों पर कही किसी छोटे से कोने में। टी.वी. तो इससे भी चार कदम आगे है। टी. वी. पर चौनलों की जैसे बाढ़ सी आई हुई है। हर किसी का ध्येय है ऊँची टी. आर. पी. यानि अधिक से अधिक पैसा। जरा देखिए न्यूज चौनल पर आप को क्या देखने को मिलता है? सुबह– सुबह चाय के साथ अपना भविष्य जानिये। दिन में टी. वी. सीरियलों की गपशप देखिए। रात को देखिए 'सनसनी' या 'क्राइम पैट्रोल' चौन से सोना है तो जाग जाइए। ऐसा लगता है कि समाज में या तो केवल अपराध हैं या फिर हीरो–हीरोइनों के स्कैंडल। क्या कहीं कुछ अच्छा नहीं है? 'सनसनी' फैलाने के लिए ये देश की सुरक्षा को भी दाँव पर लगाने से नहीं चूकते। 26/11 को हम कैसे भूल सकते हैं। बड़े–बड़े चौनलों पर पूरी कार्यवाही का सीधा–प्रसारण दिखाया गया। जिससे होटल में घुसे आतंकवादी बाहर होने वाली हलचल से वाकिफ होते रहे और हमारा अधिक से अधिक नुकसान करते रहे। मीडिया यदि अपने निहित स्वार्थों को भूलकर अपनी जिम्मेदारी निभाए तो समाज को एक दिशा प्रदान कर सकता है। मीडिया अपराध की खबरों को दिखाए पर सकारात्मक समाचारों से भी किनारा न करे। समाज में फैली बुराइयों के अलावा विकास को भी दिखाए ताकि आम आदमी निराशा में डूबा न रहे कि इस देश का कुछ नहीं हो सकता।

जैसे–जैसे हमारी संस्कृति का विकास होता गया, जैसे–जैसे इंसान पशु से मानव बनने का सफर तय किया करता गया, वैसे–वैसे समाज में अपराध का रंग–रुप भी बदलता रहा। हमारी सभ्याता ने हमें संतोषी, सहनशील व धैयषवान बनना सिखाया है लेकिन पश्चिम में देरी से तेजी से हुए विकास ने पूंजीवाद को जन्म तदया है।

अब लगभग सारा विश्व ही पूंजीवाद की दौड़ में शामिल हो चुका है और इस पूंजीवाद की जड़ें इतनी गहरी हो चुकी हैं कि इंसान पैसा कमाने व बनाने के लिए नैतिक सिद्धांतों का ताक पर रखकर जघन्य से जघन्य और घृणित से घृणित अपराध करने से भी हिचकचता नहीं। मीडिया इससे अछूता नहीं रह गया है। जहां एक ओर मीडिया ने उदारीकरण, उपभोक्तावाद और बाजारवाद के फेरे में पड़ कर समाज की तरफदारी न करके वह उदारीकरण, उपभोक्तावाद और बाजारवाद के पक्ष में खड़ा हुआ तथा उसी का पोषण तथा अपना स्वार्थ सिद्ध किया है।

ब्रजेन्द्र ठाकुर ने अपने लेख में लिखा है कि सामयिक संदर्भ में मीडिया के विविध पक्षों का विश्लेषण किया है। वे लिखते हैं किसमाज में मीडिया की भूमिका पर बात करने से पहले हमें यह जानना चाहिए कि मीडिया क्या है? मीडिया हमारे चारों ओर मौजूद हैं, टीवी सीरियल, शो, जो हम देखते हैं, संगीत जो हम रेडियो पर सुनते हैं, पत्र–पत्रिकाएं जो हम रोज पढ़ते हैं, मोबाइल और इंटरनेट के जरिए बहुत सारा काम करते हैं। सब मीडिया ही है, अर्थात मीडिया हमारे

काफी करीब रहता है। आज मीडिया हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन गया है। तो निश्चित सी बात है कि इसका प्रभाव भी हमारे ऊपर और हमारी समाज के ऊपर पड़ेगा ही। लोकतंत्र के चार स्तंभ माने जाते हैं। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और पत्रकारिता। यह स्वाभाविक है कि जिस सिंहासन के चार पायों में से एक भी पाया खराब हो जाए तो वह रत्न जड़ित सिंहासन भी अपनी आन–बान–शान गवां देता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो। हमने वह हमारे अतीत ने इस बात को सच होते भी देखा है। वह दिन जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था तब अंग्रेजी हुकूमत के पांव उखड़ने, देश के अलग–अलग क्षेत्रों में जनता को जागरूक करने के लिए एवं ब्रिटिश हुकूमत की असलियत जनता तक पहुंचाने के लिए कई पत्र–पत्रिकाओं व अखबारों ने लोगों को आजादी के समर में कूद पड़ने एवं भारत माता को आजाद कराने के लिए कई तरह से जोश भरकर समाज के प्रति अपने दायित्व का बखूबी निर्वहन भी किया। तब देश के अलग–अलग क्षेत्रों में स्वराज्य, केसरी, काल, पाया में आजादी, युगांतर, वंदेमातरम, संध्या, प्रताप, भारत माता, कर्मयोगी, भविष्य, अभ्युदय, चांद जैसे कई ऐसी पत्र–पत्रिकाओं ने सामाजिक सरोकार के बीच देशभक्ति का पाठ लोगों को पढ़ाया और आजादी की लड़ाई में योगदान देने हेतु हमें जागरूक किया। अमेरिका के तीसरे राष्ट्रपति थॉमस जेफरसन ने कहा था कि 'यदि मुझे कभी यह निश्चित करने के लिए कहा जाये कि अखबार और सरकार में से किसी एक को चुनना है, तो मैं बिना हिचक यह कहूंगा कि सरकार चाहे न हो लेकिन अखबारों का अस्तित्व अवश्य रहे।' एक समय था जब अखबार को समाज का दर्पण कहा जाता था। समाज में जागरूकता लाने में अखबारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह भूमिकर किसी एक देश अथवा क्षेत्र तक सीमित नहीं है विश्व के तमाम प्रगतिशील विचारों वाले देशों में समाचार पत्रों की महती भूमिका से कोई इनकार नहीं कर सकता मीडिया में और विशेष तौर पर प्रिंट मीडिया में जनमत बनाने की अद्भुत शक्ति होती है। नीति निर्धारण में जनता की राय जानने में और नीति निर्धारकों तक जनता की बात पहुंचाने में समाचार पत्र एक सेतु की तरह काम करते हैं। समाज पर समाचार पत्रों का प्रभाव जानने के लिए हमें एक दृष्टि अपने इतिहास पर डालनी चाहिए। लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी और पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने अखबारों को अपनी लड़ाई का एक महत्वपूर्ण हथियार बनाया। आजादी के संघर्ष में भारतीय समाज को एकजुट करने में समाचार पत्रों की विशेष भूमिका थी। यह भूमिका इतनी प्रभावशाली हो गई थी कि अंग्रेजों ने प्रेस के दमन के लिए हरसंभव कदम उठाए, स्वतंत्रता के पश्चात लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा और वकालत करने में अखबार अग्रणी रहे। आज मीडिया अखबारों तक सीमित नहीं है, परंतु इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और वेब मीडिया की तुलना में प्रिंट मीडिया की पहुंच और विश्वसनीयता कहीं अधिक है। प्रिंट मीडिया का महत्व इस बात से और बढ़ जाता है कि आप छपी हुई बातों को संदर्भ के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं और उनका अध्ययन भी कर सकते हैं। ऐसे में प्रिंट मीडिया की जिम्मेदारी भी निश्चित रूप से बढ़ जाती है। अपनी शुरुआत के दिनों में पत्रकारिता हमारे देश में एक मिशन के रूप में जन्मी थी; जिसका उद्देश्य सामाजिक चेतना को और अधिक जागरूक करने का था। तब देश में गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे युवाओं की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक आजादी के लिए संघर्षमयी पत्रकारिता को देखा गया। कल की पत्रकारों को न यातनाएं विचलित कर पाती थी, न धमकियां। आर्थिक कष्टों से भी उनकी कलम कांपती नहीं थी, बल्कि दुगनी दुगने जोश के साथ अंग्रेजों के खिलाफ आग गलती थी। स्वाधीनता की पृष्ठभूमि पर संघर्ष करने वाले तथा देश की आजादी के लिए लोगों में अहिंसा का अलग जगाने वाले महात्मा गांधी स्वयं एक अच्छे लेखक व कलमकार थे। महामना मालवीय जी ने भी अपनी कलम से जनता को जगाने का कार्य किया। तब पत्रकारिता के मायने

थे– देश की आजादी और फिर आजादी के बाद देश की समस्याओं के निराकरण को लेकर अंतिम दम तक संघर्ष करना और कलम की धार को अंतिम दम तक तेज रखना। जब देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। पत्रकारिता ने देश में राष्ट्रीय भाव पैदा किए। दरअसल पत्रकारिता देश और समाज सेवा के जुनून का दूसरा नाम है। सच्चा पत्रकार बिना अपने परिवार, धन और ऐश्वर्य की परवाह किए बिना मर मिटने को तैयार रहता है। पत्रकारिता एक समर्पित दृष्टि और जीवन पद्धति है; जो व्यक्ति विशेष या खिलवाड़ नहीं है। यह समर्पित दृष्टि तथा जीवन पद्धति जिसमें होती है वह सच्चा पत्रकार होता है। देश की स्वतंत्रता के बाद सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक ढांचे में जहां बुनियादी परिवर्तन आए वही पत्रकारिता के क्षेत्र में भी व्यापक बदलाव आया। पत्रकारिता ने एक उद्योग का स्वरूप ग्रहण कर लिया जिसके कारण उद्योगिक, कॉरपोरेट तथा व्यावसायिकता की समस्त विकृतियों भी पत्रकारिता में आने लगी। इस तरह निष्पक्ष पत्रकारिता का पूरा आदर्श ढांचा ही चर्मराने लगा। समाचार पत्र किसी कारखाने के उत्पाद नहीं होते हैं लेकिन पिछले एक दशक में उन्हें एक उत्पाद भर बनाए जाने की साजिश की जा रही है। अखबारों के पन्ने रंगीन होते जा रहे हैं और उनमें विचारहिनता साफ झलकती है। समाचार पत्रों में सिर्फ विचारों का ही अभाव नही अभाव नहीं है बल्कि उसके विपरीत उन्हें फिल्मों, लजीज व्यंजन और सेक्स संबंधित ऐसी तमाम सामग्री बहुतायत में परोसी जाने लगी है जो मनुष्य के जीवन में पहले बहुत अहम स्थान नहीं रखती थी। यानी समाचार पत्रों के माध्यम से एक ऐसी काल्पनिक दुनिया का निर्माण किया जा रहा है जिसका देश की 90 प्रतिशत से अधिक जनता का कोई सरोकार नहीं है। लेकिन चूकी ऐसी खबरों को प्रमोट और स्पॉन्सर करने वालों की भीड़ है और अखबार को विज्ञापन चाहिए जिनके बिना विचार भी पाठकों तक नहीं पहुंच सके हैं, इसलिए अखबार को उनके सामने सिर झुकाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचता है। जब भी मीडिया और समाज की बात की जाती है, तो मीडिया को समाज में जागरूकता पैदा करने वाले एक साधन के रूप में देखा जाता है। जो कि लोगों को सही व गलत करने की दिशा में एक प्रेरक का कार्य करता नजर आता है। जहां कहीं भी अन्याय, शोषण है, अत्याचार है, भ्रष्टाचार है और छलना है, उसे जनहित में उजागर करना पत्रकारिता का मर्म और धर्म है। हर ओर से निराश व्यक्ति अखबार की तरफ आता है। अखबार ही उनकी अंधकामय जिंदगी में उम्मीद की आखिरी किरण होता है। जो पत्र और पत्रकार इसके विपरीत कार्य करते हैं, उन्हें आप पीत पत्रकारिता करने वालों की श्रेणी में डाल सकते हैं। अब सवाल यह उठता है कि क्या वाकई मीडिया अथवा प्रेस जनता की आवाज है। आखिर वह जनता किसे मानते हैं, उनके लिए शोषितों की आवाज उठाना ज्यादा महत्वपूर्ण है अथवा क्रिकेट की रिपोर्ट करना, आम आदमी के मुद्दे बड़े हैं अथवा किसी सेलिब्रिटी की निजी जिंदगी। आज की पत्रकारिता जिस दौर से गुजर रही है उस पर उसकी प्रतिबद्धता पर प्रश्नचिन्ह लग रहे हैं। वास्तव में समय के साथ मीडिया के स्वरूप और मिशन में काफी अंतर दृ ष्टिगत हुआ है। अब गंभीर मुद्दों के लिए मीडिया में जगह घटी है। अखबार का मुखपृष्ठ राज नेताओं की बयानबाजी, घोटालों, क्रिकेट मैच अथवा बाजार के उतार–चढ़ाव को ही मुख्य रूप से स्थान दिया जा रहा है। जिस पर कल तक खोजी पत्रकारिता के द्वारा ग्रामीण पृष्ठभूमि की समस्या, ग्रामीणों की राय, गांव की चौपाल प्रमुखता से छापी जाती थी, वही आज फिल्मी गानों की तस्वीर और फिल्मी सितारों की निजी जिन्दगी नजर आती है। और समाज की भी ऐसी अभिरूचि पैदा कर दी गई है कि उसे जब तक फिले सितारों की रंगीन तस्वीर दिखाई नहीं देगी, उनका अखबार पढ़ना ही बैकार है। अखबार मानों रोमांस और कामुक प्रसंगों की खेज में लगा हो। माहोल यह पैदा करदिया गया है कि दिल्ली जैसे शहरों में ही चाहे आप मेट्रो में यात्रा कर रहे हो या दिल्ली परिवहन निगम की बसों में लड़कियां कहीं भी सुरक्षित

नहीं है, उस पर मीडिया ऐसे मामलों को इस तरह से उठाता है जैसे कोई फिल्मी मसाला हो, उसे बस अपनी टीआरपी की चिंता रहती है। महिलाओं, लड़कियों, बच्चियों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार को मीडिया में उछालने एक तरह से फैशनसा हो गया है। हां यह सही है कि बगैर मीडिया के कोई कार्यवाही नहीं होती है, लेकिन ऐसे मामलों पर मीडिया कर्मी खासकर टेलीविजन में एक बहस का दौर चल पड़ाा है, उसे लगता है कि टीआरपी बढ़ाने का इससे बेहतर मौका कोई और हो नहीं सकता। और वे ऐसे मौके को हाथ से जाने नहीं देना चाहते है। इस तरह की प्रवृत्ति पर मीडिया पर लगाम लगाने की आवश्यकता है अपनी टीआरपी के लिए किसी की आबरू से खेलना मीडिया की आज नकारात्मक प्रवृत्ति है। बल्कि ऐसे मामलों में चैनल हो या प्रिंट मीडिया एक प्रतिस्पर्धा ही रहती है। आधुनिकता और वैश्वीकरण के इस दौर में पत्र–पत्रिकाओं वह नामी–गिरामी न्यूज चैनलों को ग्रामीण परिवेश से लाभ नहीं हो पाता और सरोकार भी नहीं है। इसलिए वे धीरे–धीरे इससे दूर भागता जा रहा है। औद्योगीकरण के इस दौर में पत्रकारिता में भी सामाजिक सरोकारों को भुलाते हुए उद्योग का रूप ले लिया है। गंभीर से गंभीर मुद्दे अंदर के प्रष्ठों पर लिए जाते हैं तथा कई बार तो सिरे से गायब रहते हैं। समाचारों के रूप में कई समस्याएं जगह तो पा लेती है परंतु उन पर गंभीर विमर्श के लिए प्रष्ठों की कमी हो जाती है। सामाजिक और राष्ट्रीय तथा संवेदनशील मुद्दों पर मीडिया की तटस्थता लोकतंत्र के लिए अत्यंत घातक हो सकती हैं। मीडिया और सरकार के बीच के रिश्ते हमेशा अच्छे नहीं हो सकते क्योंकि मीडिया का काम ही है सरकार और सरकारी कामकाज पर नजर रखना लेकिन वह सरकार को लोगों की समस्याओं, उनकी भावनाओं और उनकी मांगों से भी अवगत कराने का काम करता है। अवगत कराता है कि सरकार जन भावनाओं के अनुरूप काम करें।

आज के दौर में पत्रकारिता कहां पर है और आमजन को उसकी समस्या का हल कौन देगा, यह बात बताने वाली पत्रकारिता अपने आप से आज यह सवाल पूछ रही है कि मैं कौन हूं। आज देश आतंकवाद, नक्सलवाद, धार्मिक कटटरता, दलित, आदिवासी, महिला शोषण और साम्प्रदायिकता जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है लेकिन इससे निपटने के लिए आमजन को क्या करना चाहिए, सरकार की क्या भूमिका हो सकती है, कई मुद्दों पर मीडिया मौन रूख किये हुए है। लेकिन वही नक्सली क्रूरता और आतंकी गतिविधियों को लाइव दिखाने में पीछे नही रहता है। यहां तक कि आज की खबर को दिखाने की होड़ में मीडिया के समक्ष आतंकी हमलों के तुरंत बाद ही हमला करने वाले कमांडर व अन्य आरोपियों के ई–मेल तक आ जाते हैं। गौर करने वाली बात यह है कि बार–बार व प्रतिदिन इस समाचार को दिखाने और छापने से फायदा किसका होता है? आम जनता का, पुलिस का, नक्सली, आतंकी का या फिर मीडिया घरानों का। निश्चित रूप से इसका फायदा मीडिया व इन देशद्रोही तत्वों का होता है जिन्हें बिना किसी कारण से बढ़ावा मिलता है क्योंकि बार–बार इनको प्रदर्शित करने से आमजनों व बच्चों में संबंधित लोगों के खिलाफ खौफ उत्पन्न हो जाता है और यह असामाजिक तत्व चाहते भी यही है। इसलिए आजयह जरूरी है कि मीडिया और इसको चलाने वाले ठेकेदारों को यह तय करना होगा कि मीडिया ने सामाजिक सरोकारों को दूर करने में कितनी कामयाबी हासिल की है। आज लगातार मीडिया की भूमिका कई मामलों में संदिग्ध सी लगती है, कई जहां पर उन्हें न्याय दिलाने की जरूरत होती है, इन लोगों को मीडिया से यह अपेक्षा होती है कि मीडिया के द्वारा उनकी मांगों को समस्याओं पर विशेष ध्यान देते हुए समस्या का समाधान किया जाएगा। ऐसे कई मौकों पर मीडिया की भूमिका से लोगों को काफी असहज महसूस होता है। कभी–कभी तो ऐसा भी महसूस किया जाता है कि कुछ मीडिया घराना मात्र किसी एक व्यक्ति, पार्टी व संस्था के लिए ही कार्य कर

रही है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में ब्रेकिंग न्यूज की होड़ में यह अनुमान लगाना कठिन हो जाता है कि सच्चाई क्या है। आज प्रिंट मीडिया को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से तगड़ी स्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सामर्थ्य की वजह से दर्शकों को 24 घंटे उपलब्ध है। टीआरपी की चाह में टीवी न्यूज चौनल सिर्फ गंभीर विमर्श तक सीमित नहीं है, फिल्मी चकाचौंध, सास बहू किस्से, क्रिकेट की दुनिया के अलावा अंधविश्वासों तक को अपने प्रोग्राम में काफी स्थान देते हैं। ऐसे में प्रिंट मीडिया का भी स्वरूप बदलने लगा है और अखबारों के पन्ने भी झकझोरने के बजाए गुदगुदाने का काम करने लगे हैं। एक और समाचार पत्र के परिशिष्ट टीवी के समान ही सामग्री देने लगे हैं वहीं दूसरी ओर समाचार पत्रों की साख में भी उतारा गया है। बल्कि साख आज मुद्दा ही नहीं रह गया लगता है। आज तो किसी भी तरह व्यापार होना चाहिए चटपटी सामग्री की उपयोगिता का प्रश्न समाप्त होने लगा है। इससे बड़े बड़े समाचार पत्रों की प्रभावशीलता घटने लगी है। सामाजिक मुद्दों को उठाने की चिंता घट गई है इसका श्रेय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को है। यहीं से इस दौर की शुरुआत हुई है अतः स्वयं मीडिया भी इतना बदल गया है कि लोकतंत्र का चौथा पाया हिलता हुआ नजर आने लगा है।

निष्कर्ष : सारांश में कहा जा सकता है कि आज मीडिया का स्वरूप, भूमिका और दायित्व बदल गया है। मीडिया ने आज उद्योग का रूप ग्रहण कर लिया है जिसमें पूँजी की अहम भूमिका हो गयी है। सोशल मीडिया ने तो सारे मानक ही तोड़ दिये हैं। मीडिया प्रतिस्पर्धा में अपने दायित्व और प्रतिबद्धता को भूलता जा रहा है। देश और समाज में मीडिया लोकतांत्रात्रिक व्यवस्था में मीडया की महती भूमिका होती है। अगर हम इतिहास की तरफ दृष्टिपात करें तो यह यह बात प्रमाणित भी होती है।

संदर्भ :

1.विवेचनात्मक अपराध शास्त्र : राम आहूजा, मुकेश आहूजा, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर

2.सामाजिक समस्याएं : राम आहूजा, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर

3.मीडिया, साहित्य और संस्कृति– माधव हाड़ा, श्याम प्रकाशन जयपुर

4.httpshrajanpath-13.blogspot.com